रोल नं. ☐☐☐☐☐☐☐☐

प्रश्न-पत्र कोड 2/1/1

हिंदी (आधार) – सत्र II

CBSE Class XII Board Examination 2022 (Term 2) — with answers

निर्धारित समय: 2 घंटे **अधिकतम अंक: 40**

सामान्य निर्देश:

1. प्रश्न-पत्र में केवल वर्णनात्मक प्रश्न हैं और यह दो खंडों – खंड क तथा खंड ख – में बँटा है।
2. कुल 7 प्रश्न हैं; सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. कई प्रश्नों में आंतरिक विकल्प (अथवा) दिए गए हैं; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर लिखिए।
4. जहाँ शब्द-सीमा दी गई है, उत्तर उसी के भीतर लिखिए।

खंड – क

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (20 अंक): प्रश्न 1–4, प्रत्येक 5 अंक।

1. *दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक पर लगभग 150-200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।* **5**

'कोविड टीकाकरण केंद्र का दृश्य' विषय पर लगभग 150-200 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

भूमिका (1) + विषयवस्तु (3) + भाषा (1)। बिंदु: केंद्र का माहौल, कतार और पंजीकरण, स्वास्थ्यकर्मियों की सेवा, लोगों की भावनाएँ (डर-उत्साह), टीके के बाद निगरानी, समापन संदेश।

आदर्श उत्तर (संक्षेप में):
सुबह आठ बजे ही हमारे मोहल्ले के सरकारी विद्यालय में बने टीकाकरण केंद्र के बाहर लंबी कतार लग चुकी थी। मास्क लगाए बुज़ुर्ग, युवा और महिलाएँ गोल घेरों में दूरी बनाकर खड़े थे। प्रवेश द्वार पर एक स्वयंसेवक सबके हाथ सैनिटाइज़ करवा रहा था और तापमान जाँच रहा था।
भीतर पहली मेज़ पर पंजीकरण हो रहा था – कोई मोबाइल पर आया संदेश दिखा रहा था, तो कोई आधार कार्ड। दूसरी ओर नर्सें मुस्कराते हुए लोगों का डर दूर कर रही थीं। एक दादी जी सुई से घबरा रही थीं, पर नर्स की बातों से वे हँस पड़ीं और टीका लगवा लिया।
टीका लगने के बाद सबको आधे घंटे निगरानी कक्ष में बैठाया गया। वहाँ दीवारों पर 'दो गज़ दूरी, मास्क है ज़रूरी' जैसे संदेश लगे थे। लोगों के चेहरों पर राहत थी कि वे अपने परिवार की सुरक्षा की ओर एक कदम बढ़ा चुके हैं।
यह दृश्य बताता है कि संकट में अनुशासन, सेवा और जागरूकता मिलकर ही समाज को बचाते हैं।
अंक-विभाजन: आकर्षक भूमिका – 1, विषयवस्तु (क्रमबद्ध, सजीव वर्णन) – 3, शुद्ध व प्रवाहपूर्ण भाषा – 1। शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

अथवा

'जीवन में प्रतिस्पर्धा की भूमिका' विषय पर लगभग 150-200 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

भूमिका (1) + विषयवस्तु (3) + भाषा (1)। बिंदु: प्रतिस्पर्धा का अर्थ, सकारात्मक पक्ष (मेहनत, नवाचार, आत्मविश्वास), नकारात्मक पक्ष (तनाव, ईर्ष्या, अनुचित साधन), स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता, निष्कर्ष।

आदर्श उत्तर (संक्षेप में):
प्रतिस्पर्धा का अर्थ है दूसरों से आगे निकलने की इच्छा के साथ अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करना। विद्यालय की परीक्षा हो, खेल का मैदान हो या नौकरी – आज जीवन का हर क्षेत्र प्रतिस्पर्धा से भरा है।
स्वस्थ प्रतिस्पर्धा मनुष्य को आलस्य से बाहर निकालती है। जब हम किसी साथी को आगे बढ़ते देखते हैं तो हम भी अधिक मेहनत करते हैं, नई चीज़ें सीखते हैं और अपनी कमियाँ दूर करते हैं। व्यापार में प्रतिस्पर्धा के कारण ही ग्राहकों को अच्छी वस्तुएँ कम दाम पर मिलती हैं।
पर जब प्रतिस्पर्धा होड़ बन जाती है तो तनाव, ईर्ष्या और निराशा जन्म लेते हैं। कुछ लोग जीतने के लिए अनुचित साधन अपनाने लगते हैं; अंकों के दबाव में विद्यार्थी अवसाद तक में चले जाते हैं।
इसलिए आवश्यक है कि हम दूसरों से नहीं, अपने कल से प्रतिस्पर्धा करें, हार को सीख मानें और साथियों का सम्मान करें। संतुलित प्रतिस्पर्धा ही जीवन को गति और दिशा देती है।
अंक-विभाजन: भूमिका – 1, विषयवस्तु – 3, भाषा – 1।

अथवा

'स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान' विषय पर लगभग 150-200 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

भूमिका (1) + विषयवस्तु (3) + भाषा (1)। बिंदु: दुकान का स्थान व रूप, सामान की विविधता, छुट्टी/सुबह के समय की भीड़, दुकानदार का व्यवहार, विद्यार्थियों के लिए उपयोगिता, निष्कर्ष।

आदर्श उत्तर (संक्षेप में):
हमारे विद्यालय के मुख्य द्वार के ठीक सामने 'शर्मा स्टेशनरी' नाम की एक छोटी-सी दुकान है, जो बच्चों के लिए किसी खज़ाने से कम नहीं। काँच के डिब्बों में रंग-बिरंगे पेन, पेंसिलें, रबड़, कटर, चार्ट-पेपर और परियोजना-

फ़ाइलें सजी रहती हैं।
सुबह प्रार्थना से पहले और छुट्टी के बाद यहाँ सबसे अधिक भीड़ होती है। कोई अचानक भूली हुई ज्यामिति-बॉक्स खरीदता है, तो कोई कल के प्रोजेक्ट के लिए ग्लिटर और गोंद। छोटे बच्चे टॉफ़ी और स्टिकर देखकर ललचाते हैं। दुकानदार अंकल सबको धैर्य से सामान दिखाते हैं; कभी किसी के पास पैसे कम हों तो अगले दिन देने की छूट भी दे देते हैं। परीक्षा के दिनों में वे फ़ोटोकॉपी और स्पाइरल-बाइंडिंग का काम भी करते हैं।
इस प्रकार यह दुकान केवल व्यापार का स्थान नहीं, विद्यार्थियों की रोज़ की ज़रूरतों की साथी है। ऐसी दुकानें विद्यालय-जीवन की मीठी यादों का हिस्सा बन जाती हैं।
अंक-विभाजन: भूमिका – 1, विषयवस्तु – 3, भाषा – 1।

2. आपकी कॉलोनी का पार्क बहुत खराब हालत में है – पेड़-पौधे और घास बिखरे और उपेक्षित पड़े हैं। पार्क की उचित व्यवस्था और देखभाल के लिए नगर-निगम अधिकारी को पत्र लिखिए। **5**

उत्तर

औपचारिक पत्र: प्रेषक का पता, दिनांक, सेवा में – नगर-निगम अधिकारी, विषय, संबोधन (महोदय), मुख्य भाग (समस्या का वर्णन + सुझाव/अनुरोध), धन्यवाद, भवदीय, नाम। अंक: आरंभ-अंत की औपचारिकताएँ 1 + विषयवस्तु 3 + भाषा 1।

आदर्श पत्र:
परीक्षा भवन, नई दिल्ली
दिनांक: 10 मार्च 2022
सेवा में,
नगर-निगम अधिकारी,
उद्यान विभाग, नगर निगम, नई दिल्ली
विषय: कॉलोनी के पार्क की दुर्दशा सुधारने हेतु।
महोदय,
मैं आपका ध्यान अपनी कॉलोनी (क.ख.ग. नगर) के सार्वजनिक पार्क की खराब हालत की ओर दिलाना चाहता/चाहती हूँ। पिछले कई महीनों से यहाँ माली नहीं आया है। घास सूख गई है या बेतरतीब बढ़ गई है, पौधे मुरझा गए हैं और कई पेड़ों की टहनियाँ टूटकर रास्ते पर पड़ी हैं। झूले टूटे हैं और कूड़ा जमा रहने से मच्छर पनप रहे हैं। बच्चे और बुज़ुर्ग, जो रोज़ यहाँ टहलते थे, अब पार्क में जाने से कतराते हैं।
आपसे निवेदन है कि पार्क में नियमित माली की नियुक्ति, घास की कटाई, नए पौधारोपण, सफ़ाई और झूलों की मरम्मत की व्यवस्था शीघ्र करवाई जाए।
आशा है आप इस विषय में तुरंत कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय/भवदीया
क.ख.ग.
(निवासी एवं सचिव, निवासी कल्याण समिति)
ध्यान दें: औपचारिक पत्र में 'विषय' अवश्य लिखें; भाषा विनम्र और संक्षिप्त रखें।

अथवा

सरकार के लिंग-अनुपात सर्वेक्षण के अनुसार देश में लड़कियों के जन्म का प्रतिशत पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ा है। इस पर संतोष प्रकट करते हुए किसी हिंदी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर

संपादक के नाम औपचारिक पत्र: पता, दिनांक, सेवा में संपादक (समाचार-पत्र का नाम), विषय, महोदय, मुख्य भाग (सर्वेक्षण का उल्लेख, खुशी, कारण – जागरूकता/योजनाएँ, आगे के सुझाव), धन्यवाद, भवदीय। अंक: औपचारिकताएँ 1 + विषयवस्तु 3 + भाषा 1।

आदर्श पत्र:
परीक्षा भवन, जयपुर
दिनांक: 10 मार्च 2022
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, जयपुर
विषय: लिंग-अनुपात में सुधार पर संतोष।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं हाल ही में प्रकाशित सरकारी सर्वेक्षण के परिणाम पर अपनी

प्रसन्नता व्यक्त करना चाहता/चाहती हूँ। सर्वेक्षण से पता चला है कि देश में लड़कियों के जन्म का प्रतिशत पिछले वर्षों से अधिक हुआ है। यह समाज की सोच में आ रहे सकारात्मक बदलाव का संकेत है।
इसके पीछे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों, कन्या भ्रूण-हत्या के विरुद्ध कड़े कानूनों और जनजागरूकता का बड़ा योगदान है। बेटियाँ आज शिक्षा, खेल, विज्ञान और सेना – हर क्षेत्र में देश का नाम रोशन कर रही हैं।
फिर भी कई क्षेत्रों में स्थिति चिंताजनक है। मेरा सुझाव है कि गाँव-गाँव में जागरूकता शिविर चलें और बेटियों की शिक्षा व सुरक्षा पर और ध्यान दिया जाए।
आशा है आप इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में स्थान देंगे।
धन्यवाद।
भवदीय/भवदीया
क.ख.ग.

3. (क) कहानी और नाटक में कौन-कौन से तत्त्व एक जैसे होते हैं? इनका उल्लेख करते हुए दोनों का अंतर भी बताइए। **5**

उत्तर

समान तत्त्व: कथानक, पात्र, परिवेश, क्रमिक विकास, संवाद, द्वंद्व, चरम उत्कर्ष। अंतर: कहानी पढ़ी/सुनी/कही जाती है, नाटक मंच पर दिखाया जाता है; कहानी लेखक-पाठक को जोड़ती है, नाटक लेखक-निर्देशक-अभिनेता-दर्शक सबको; नाटक में मंच-सज्जा, संगीत, प्रकाश की ज़रूरत।

समानता (1½ अंक): दोनों में एक कथानक होता है, जिसे पात्र आगे बढ़ाते हैं। दोनों में देश-काल (परिवेश), घटनाओं का क्रमिक विकास, संवाद, संघर्ष या द्वंद्व और अंत में चरम सीमा (क्लाइमेक्स) होती है।
अंतर (1½ अंक):
1. कहानी को पढ़ा, सुना या सुनाया जाता है, जबकि नाटक को मंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
2. कहानी का संबंध सीधे लेखक और पाठक से है; नाटक में लेखक, निर्देशक, अभिनेता, दर्शक और तकनीकी लोग – सब जुड़ते हैं।
3. कहानी में वर्णन से काम चल जाता है, पर नाटक में मंच-सज्जा, प्रकाश, ध्वनि और संगीत की व्यवस्था करनी पड़ती है।
ध्यान दें: केवल अंतर लिखकर समानताएँ छोड़ने पर आधे अंक कट जाते हैं।

अथवा

(क) किसी कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय उसे दृश्यों में किन आधारों पर बाँटा जाता है?

उत्तर

समय और स्थान के अनुसार कथावस्तु का विभाजन; एक स्थान-समय की घटना एक दृश्य में; कथाक्रम/विकास का ध्यान; हर दृश्य कथानक के अनुरूप; पात्रों की भाषा-परिवेश; मानसिक द्वंद्व के लिए 'वॉयस ओवर'। (कोई तीन)

दृश्य-विभाजन के मुख्य आधार:
1. कहानी की घटनाओं को उनके समय और स्थान के अनुसार अलग-अलग किया जाता है – स्थान या समय बदले तो नया दृश्य।
2. एक ही स्थान और समय पर घटी घटनाओं को एक ही दृश्य में रखा जाता है।
3. कथा का क्रम और विकास बना रहे, इसका ध्यान रखा जाता है ताकि दृश्य एक-दूसरे से जुड़े लगें।
4. हर दृश्य कथानक के लिए उपयोगी होना चाहिए; अनावश्यक दृश्य हटाए जाते हैं।
5. पात्रों के मन के भाव या अंतर्द्वंद्व दिखाने के लिए 'वॉयस ओवर' जैसी युक्ति का सहारा लिया जाता है।
कोई भी तीन बिंदु सही समझाने पर पूरे अंक।

(ख) रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंगमंच के लेखन से कैसे भिन्न है? रेडियो नाटक में बात श्रोता तक कैसे पहुँचाई जाती है?

उत्तर

रेडियो श्रव्य माध्यम है – इसमें दृश्य, मंच-सज्जा, वेशभूषा, भाव-भंगिमा नहीं होती; एक्शन की गुंजाइश कम; अवधि और पात्र सीमित। संप्रेषण केवल संवाद, ध्वनि-प्रभाव और संगीत से होता है।

1. सिनेमा और रंगमंच दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं, जबकि रेडियो केवल सुना जाता है; इसलिए रेडियो नाटक में न दृश्य होते हैं, न मंच-सज्जा, वेशभूषा या चेहरे के भाव।
2. रेडियो नाटक में सब कुछ – पात्रों का परिचय, स्थान, समय, मनोदशा – संवादों, ध्वनि-प्रभावों और संगीत के माध्यम से श्रोता तक पहुँचाया जाता है। उदाहरण: दरवाज़ा खुलने की आवाज़, पक्षियों की चहचहाहट से सुबह का संकेत।
(कोई दो बिंदु – 1+1 अंक)

अथवा

(ख) रेडियो नाटक लिखने के लिए कहानी चुनते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर

कहानी केवल घटना-प्रधान (एक्शन वाली) न हो; उसकी अवधि बहुत लंबी न हो; पात्रों की संख्या सीमित हो। (कोई दो)

1. कहानी केवल घटनाओं या एक्शन पर टिकी न हो, क्योंकि रेडियो पर एक्शन दिखाया नहीं जा सकता; उसमें संवाद और भाव अधिक हों।
2. कहानी इतनी लंबी न हो कि 15-30 मिनट में न समा सके।
3. पात्र कम हों (लगभग 5-6), ताकि श्रोता केवल आवाज़ से उन्हें पहचान और याद रख सके।

कोई दो बिंदु – 2 अंक।

4. (क) पत्रकारीय लेखन साहित्यिक लेखन से किस तरह अलग है? स्पष्ट कीजिए। **5**

उत्तर

पत्रकारीय लेखन तथ्यों व ताज़ा घटनाओं पर, साहित्यिक लेखन कल्पना व लेखक की सोच पर; पत्रकारीय लेखन का पाठक-वर्ग विशाल, साहित्यिक का सीमित; पत्रकारीय भाषा सरल-सहज, साहित्यिक भाषा अलंकारिक हो सकती है; पत्रकारीय लेखन समय-सीमा व पाठक की ज़रूरत से बँधा, साहित्यिक में लेखक स्वतंत्र।

1. विषय और आधार: पत्रकारीय लेखन समसामयिक, वास्तविक घटनाओं और तथ्यों पर आधारित होता है; साहित्यिक लेखन लेखक की कल्पना, अनुभूति और विचारों से जन्म लेता है।
2. पाठक: अख़बार/चैनल का पाठक-वर्ग बहुत बड़ा और विविध होता है; साहित्य का पाठक-वर्ग अपेक्षाकृत सीमित।
3. भाषा: पत्रकारीय भाषा सरल, स्पष्ट और तुरंत समझ में आने वाली होती है; साहित्यिक भाषा में अलंकार, प्रतीक, तत्सम शब्द आ सकते हैं।
4. स्वतंत्रता: पत्रकार को समय-सीमा (डेडलाइन) और पाठकों की रुचि के अनुसार लिखना पड़ता है; साहित्यकार अपनी गति और शैली से लिखने को स्वतंत्र है।

कोई तीन बिंदु – 3 अंक।

अथवा

(क) समाचार लिखने की 'उलटा पिरामिड शैली' की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर

समाचार-लेखन की सबसे प्रचलित और बुनियादी शैली; सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य/सूचना (क्लाइमेक्स) सबसे पहले – इंट्रो/मुखड़े में; फिर बॉडी में घटते महत्त्व के क्रम में बाकी बातें; अंत में सबसे कम ज़रूरी जानकारी।

1. यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और आधारभूत शैली है।
2. इसमें कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि सबसे पहले आता है – सबसे ज़रूरी सूचना (क्या, कौन, कब, कहाँ) इंट्रो या मुखड़े में दी जाती है।
3. उसके बाद बॉडी में घटते हुए महत्त्व के क्रम में बाकी तथ्य आते हैं, और समापन में सबसे कम महत्त्व की बातें।

लाभ: पाठक थोड़ा पढ़कर भी मुख्य बात जान लेता है, और जगह कम हो तो संपादक नीचे से काट सकता है।

इसे 'उलटा' इसलिए कहते हैं कि पिरामिड का चौड़ा भाग (मुख्य तथ्य) ऊपर होता है।

(ख) सफल साक्षात्कार लेने के लिए साक्षात्कारकर्ता में कौन-से गुण होने चाहिए?

उत्तर

विषय और व्यक्ति का पूरा ज्ञान/तैयारी, संवेदनशीलता, मधुर भाषा, कूटनीति, धैर्य, साहस, तालमेल बिठाने की क्षमता। (कोई दो)

साक्षात्कारकर्ता के पास केवल विषय का ज्ञान ही नहीं, ये गुण भी होने चाहिए:

1. संवेदनशीलता और मृदुभाषिता – ताकि सामने वाला खुलकर बात करे।
2. धैर्य और साहस – कठिन प्रश्न भी शालीनता से पूछ सके और उत्तर ध्यान से सुने।
3. कूटनीतिज्ञता व तालमेल – बातचीत को सही दिशा में मोड़ सके।

कोई दो गुण – 2 अंक।

अथवा

(ख) स्तंभ लेखन किसे कहते हैं? समझाइए।

उत्तर

विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप; कुछ प्रतिष्ठित लेखकों को नियमित रूप से अपने चुने विषय पर अपने विचार लिखने की छूट; स्तंभ लेखक के नाम से पहचाने जाते हैं।

1. स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन का एक मुख्य रूप है। समाचार-पत्र कुछ प्रसिद्ध लेखकों को एक निश्चित स्थान पर नियमित रूप से (साप्ताहिक/पाक्षिक) लिखने के लिए देते हैं।
2. स्तंभकार को विषय चुनने और उस पर अपने विचार रखने की पूरी छूट होती है।
3. इसमें लेखक के निजी विचार प्रकट होते हैं, इसलिए स्तंभ प्रायः अपने लेखकों के नाम से ही जाने जाते हैं।

कोई दो बिंदु – 2 अंक।

खंड – ख

पाठ्य-पुस्तक (आरोह) और अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक (वितान) (20 अंक): प्रश्न 5 – तीन में से कोई दो (2 × 3 = 6); प्रश्न 6 – चार में से कोई तीन (3 × 3 = 9); प्रश्न 7 – (3 + 2 = 5)।

5. *नीचे दिए तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।* **6**

(क) शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में आए किन उपमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह कविता गाँव की सुबह का एक गतिशील शब्द-चित्र है?

उत्तर

नीला शंख, राख से लीपा गीला चौका, केसर से धुली काली सिल, लाल खड़िया चाक मली स्लेट – ये सब ग्रामीण घर-आँगन के उपमान हैं और पल-पल बदलते आकाश को दिखाते हैं।

कवि ने सुबह के आकाश के लिए ऐसे उपमान चुने हैं जो गाँव के घरों में रोज़ दिखते हैं:
1. भोर का आकाश नीले शंख जैसा – पवित्र और उजला।
2. राख से लीपा हुआ गीला चौका – गाँव की रसोई का दृश्य; आकाश का सलेटी रंग और ओस की नमी।
3. काली सिल पर लाल केसर का धुलना – सूरज की पहली लाली।
4. काली स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल देना – बच्चों की स्लेट वाला ग्रामीण दृश्य।
ये उपमान एक के बाद एक बदलते हैं, जैसे आकाश का रंग पल-पल बदलता है; इसीलिए कविता गतिशील शब्द-चित्र है और उसमें गाँव की सुबह की जीवंत हलचल दिखती है।
ध्यान दें: केवल उपमान गिनाना काफी नहीं, उनका ग्रामीण जीवन और गतिशीलता से संबंध बताना ज़रूरी है।

(ख) तुलसीदास के 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग में 'बोले बचन मनुज अनुसारी' कहने का क्या आशय है?

उत्तर

भगवान राम ने भाई के शोक में साधारण मनुष्य की तरह विलाप किया – मानवीय दुःख, मोह और विवशता भरे वचन कहे; इस प्रसंग में ईश्वर राम में मानवीय गुणों का मेल दिखता है।

1. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम, जो अवतारी पुरुष हैं, एक आम इंसान की तरह शोक में डूब जाते हैं; उनका विलाप धीरे-धीरे प्रलाप बन जाता है।
2. वे कहते हैं कि यदि पता होता कि वन में भाई से बिछड़ना पड़ेगा तो पिता की आज्ञा न मानता; पत्नी खोने को उतना बड़ा दुःख नहीं मानते जितना भाई खोने को; अयोध्या लौटकर माँ सुमित्रा को क्या मुँह दिखाऊँगा।
3. ये वचन मनुष्य के स्वभाव के अनुरूप हैं, इसलिए कवि कहता है कि राम ने 'मनुष्य की तरह' बातें कीं। इससे राम का चरित्र ईश्वरीय होते हुए भी मानवीय और भावुक बनकर पाठक के दिल को छूता है।

(ग) फ़िराक़ गोरखपुरी की 'रुबाइयाँ' में एक माँ आँगन में खड़ी होकर अपने चाँद-से बच्चे को हाथों में झुला रही है और उसके लिए 'गोद-भरी' शब्द प्रयोग हुआ है। इस 'गोद-भरी' प्रयोग की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

'गोद-भरी' माँ के वात्सल्य, आनंद, उत्साह और तृप्ति को प्रकट करता है; गोद भरना माँ के लिए परम सौभाग्य का सूचक है; यह सुंदर दृश्य-बिंब रचता है।

1. 'गोद-भरी' का अर्थ है जिसकी गोद में संतान है। यह शब्द माँ के वात्सल्य और प्रेम से भरे, खिले हुए रूप को दिखाता है।
2. भारतीय समाज में गोद भरना माँ के लिए सबसे बड़े सौभाग्य का सूचक माना जाता है; बच्चे को झुलाते हुए माँ को गहरी तृप्ति और गर्व मिल रहा है।
3. यह प्रयोग एक सुंदर दृश्य-बिंब बनाता है – आँगन में खड़ी माँ, हाथों में उछलता-खिलखिलाता बच्चा – जिसे पाठक आँखों के सामने देख लेता है।
4. लोक-भाषा का यह सहज शब्द रुबाई में घरेलू आत्मीयता भर देता है।
कोई तीन बिंदु – 3 अंक।

6. *नीचे दिए चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।* **9**

(क) फणीश्वरनाथ 'रेणु' के पाठ 'पहलवान की ढोलक' के आधार पर बताइए कि गाँव में महामारी फैलने और अपने दोनों बेटों की मौत हो जाने के बाद भी लुट्टन पहलवान ढोलक क्यों बजाता रहा?

उत्तर

हैजे-मलेरिया से पीड़ित, डरे हुए गाँववालों में जीने की इच्छा (जिजीविषा) और उत्साह जगाने के लिए; रात के मौत भरे सन्नाटे को तोड़ने के लिए; ताकि लोग निडर होकर मौत का सामना करें।

1. महामारी (हैजा, मलेरिया) से गाँव उजड़ रहा था; रात में सन्नाटा और करुण चीखें ही बचती थीं। लुट्टन की ढोलक इस मौत भरे सन्नाटे को चीर देती थी।
2. ढोलक की आवाज़ सुनकर अधमरे लोगों की नसों में मानो बिजली दौड़ जाती, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता और उनमें जीने का उत्साह (जिजीविषा) जाग उठता।
3. वह जानता था कि दवा नहीं दे सकता, पर हिम्मत दे सकता है – ढोलक की ताल के सहारे लोग मरते समय भी कम पीड़ा अनुभव करते थे।
4. बेटों की मौत के बाद भी ढोलक बजाना उसकी अदम्य जिजीविषा और लोगों के प्रति संवेदना का प्रमाण है; ढोलक ही उसकी शक्ति और गुरु थी।

कोई तीन बिंदु – 3 अंक।

(ख) रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में यह भाव है कि नक्शे पर एक रेखा खींच देने से ज़मीन और लोग नहीं बँट जाते। उचित तर्कों और उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर

सीमा ने भारत-पाकिस्तान को भौगोलिक रूप से बाँटा, पर दिलों में प्रेम, भाईचारा और अपनी जन्मभूमि का लगाव बना रहा – सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती है, पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी दिल्ली को और भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दासगुप्त ढाका को।

1. विभाजन ने राजनीतिक सीमा तो बना दी, पर दोनों ओर के लोगों के मन में आज भी आपसी स्नेह, सौहार्द और सहानुभूति है।
2. उदाहरण: अमृतसर में रहने वाली सिख बीबी आज भी लाहौर को 'अपना वतन' कहती है और वहाँ का नमक मँगवाती है।
3. पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी दिल्ली को अपना वतन मानता है और नियम होने पर भी सफ़िया को नमक ले जाने देता है; भारतीय सीमा पर सुनील दासगुप्त ढाका को अपना वतन बताता है और नमक की पुड़िया लौटा देता है।
4. इससे सिद्ध होता है कि राजनीतिक तनाव के बावजूद जनता के दिलों में मोहब्बत का नमकीन स्वाद घुला है; ज़मीन पर खिंची लकीर भावनाओं को नहीं बाँट सकती।

(ग) डॉ. भीमराव आंबेडकर के अनुसार 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है? समझाइए।

उत्तर

दासता केवल कानूनी गुलामी नहीं; वह स्थिति भी दासता है जिसमें कुछ लोगों को दूसरों द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्य निभाने को मजबूर होना पड़े – जैसे इच्छा के विरुद्ध पैतृक पेशा अपनाना।

1. आंबेडकर कहते हैं कि दासता का अर्थ केवल कानून द्वारा किसी को गुलाम बनाना नहीं है।
2. जब किसी व्यक्ति को दूसरों के बनाए नियमों के अनुसार चलने, उनका तय किया काम करने और उनकी इच्छा के अनुसार जीवन बिताने पर विवश किया जाए, तो वह भी दासता है।
3. जाति-प्रथा में व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के विरुद्ध जन्म से तय पैतृक पेशा अपनाना पड़ता है – यह कानूनी गुलामी न होते हुए भी दासता ही है।
4. इसलिए सच्ची स्वतंत्रता के लिए व्यवसाय चुनने की आज़ादी आवश्यक है।

(घ) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर श्रम-विभाजन और श्रमिक-विभाजन का मूल अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

श्रम-विभाजन: काम का बँटवारा व्यक्ति की क्षमता, कुशलता और रुचि के आधार पर – व्यक्ति पेशा चुनने को स्वतंत्र। श्रमिक-विभाजन (जाति-प्रथा): लोगों को जन्म के आधार पर बाँटकर पैतृक पेशा थोपना – पेशा चुनने या बदलने की अनुमति नहीं।

1. श्रम-विभाजन आधुनिक समाज की आवश्यकता है, जिसमें कार्यों को क्षमता और कार्यकुशलता के आधार पर बाँटा जाता है, ताकि उत्पादन बढ़े।
2. जाति-प्रथा श्रम का नहीं, श्रमिकों का विभाजन करती है – वह मनुष्यों को जन्म के आधार पर ऊँच-नीच के खानों में बाँट देती है और उन्हें पैतृक व्यवसाय अपनाने को मजबूर करती है।
3. श्रम-विभाजन में व्यक्ति रुचि के अनुसार पेशा चुन सकता है; श्रमिक-विभाजन में न चुनने की अनुमति है, न विपरीत परिस्थिति में पेशा बदलने की – इससे बेरोज़गारी और अरुचि बढ़ती है।

आंबेडकर के अनुसार श्रमिक-विभाजन अस्वाभाविक है।

7. (क) 'अतीत में दबे पाँव' (ओम थानवी) पाठ के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए कि टूटे-फूटे खंडहर केवल सभ्यता-संस्कृति का इतिहास ही नहीं बताते, बल्कि धड़कती ज़िंदगी के उन क्षणों का भी प्रमाण होते हैं जिन्हें किसी ने छुआ नहीं। 5

उत्तर

मोहनजोदड़ो के खंडहरों में घूमते हुए लेखक को लगता है कि वहाँ अब भी जीवन है – घर की दीवार से पीठ टिकाना, रसोई की खिड़की पर खाने की गंध, सूनी सड़कों पर बैलगाड़ी की आहट; अवशेषों से वहाँ के लोगों के रहन-सहन, काम और सोच की कल्पना होती है।

1. लेखक मोहनजोदड़ो के खंडहरों में घूमते हुए महसूस करता है कि ये केवल पत्थर-ईंट नहीं; जैसे अभी-अभी कोई यहाँ रहकर गया हो।
2. वह किसी घर की दीवार से पीठ टिकाकर सुस्ता सकता है, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर मानो खाने की गंध पा सकता है, सूनी गलियों में बैलगाड़ी की रुनझुन सुन सकता है।
3. खुदाई में मिले अवशेष – बर्तन, औज़ार, मुहरें, खिलौने, कुएँ, स्नानागार – वहाँ के लोगों के रहन-सहन, काम करने के ढंग और सोच की झलक देते हैं।
4. इसलिए खंडहर इतिहास की किताब के साथ-साथ उस समय की जीती-जागती ज़िंदगी के भी दस्तावेज़ हैं।

अथवा

(क) 'डायरी के पन्ने' (ऐन फ़्रैंक की डायरी) एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर

द्वितीय विश्वयुद्ध में नीदरलैंड्स पर जर्मन कब्ज़े के बाद यहूदियों पर नाज़ी अत्याचार से बचने के लिए फ़्रैंक परिवार अज्ञातवास में रहा; 13 वर्ष की ऐन ने उस भयावह दौर का प्रत्यक्ष अनुभव, डर, अभाव और सामाजिक-आर्थिक हालात लिखे – इसलिए यह नाज़ी दमन का जीवंत दस्तावेज़ है।

1. पृष्ठभूमि: द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी ने नीदरलैंड्स पर अधिकार कर लिया। नाज़ियों की नस्ली घृणा में लाखों यहूदी मारे गए, इसलिए ऐन का परिवार दो वर्ष से अधिक एक गुप्त स्थान पर छिपा रहा।
2. तेरह-चौदह साल की ऐन ने इस समय की घटनाएँ डायरी में लिखीं – हवाई हमले, पकड़े जाने का डर, भोजन की कमी, बीमारियाँ, कतारें, चोरियाँ।
3. इसमें इतिहास के एक बेहद डरावने और दर्दनाक अध्याय का प्रत्यक्ष अनुभव है, किसी इतिहासकार का बाद में लिखा विवरण नहीं; इसलिए यह जीवंत है।
4. साथ ही उस समय का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य और एक किशोरी की भावनाएँ भी इसमें दर्ज हैं।

(अन्य तर्कसंगत विचार भी स्वीकार्य)

(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर बताइए कि पुरातत्त्व के किन संकेतों से कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने के बजाय समझ से अनुशासित सभ्यता थी?

उत्तर

खुदाई में औज़ार मिले पर हथियार नहीं; नगर-योजना, वास्तुकला, मुहरों, जल-निकासी व सफ़ाई में एकरूपता; राजप्रासाद, भव्य मंदिर या समाधियाँ नहीं; प्रभुत्व या दिखावे का अभाव – 'लो-प्रोफ़ाइल' संस्कृति। (कोई दो)

1. खुदाई में खेती-बाड़ी और कारीगरी के औज़ार तो मिले, पर तलवार-भाले जैसे हथियार नहीं मिले – अर्थात् सेना या बल-प्रयोग का शासन नहीं था।
2. पूरे क्षेत्र में नगर-योजना, ईंटों के आकार, मुहरों, जल-निकासी और सफ़ाई की व्यवस्था में एकरूपता है – यह आपसी समझ और अनुशासन से ही संभव है।
3. न भव्य राजमहल मिले, न विशाल मंदिर या राजाओं की समाधियाँ; शासकों के प्रभुत्व या दिखावे का

कोई चिह्न नहीं।
कोई दो बिंदु – 2 अंक।

अथवा

(ख) 'डायरी के पन्ने' में औरतों को बहादुर सिपाहियों से भी अधिक मज़बूत और साहसी क्यों कहा गया है?

उत्तर

युद्ध में सिपाही जितनी पीड़ा झेलता है, उससे अधिक कष्ट स्त्री बच्चे को जन्म देते समय सहती है; फिर भी बाद में उसे उपेक्षा मिलती है; मानव जाति को आगे बढ़ाने के लिए वह जितना संघर्ष करती है, उतना डींग हाँकने वाले सिपाही मिलकर भी नहीं करते।

1. ऐन लिखती है कि युद्ध में लड़ने वाले वीर को जितनी चोट, बीमारी और यातना सहनी पड़ती है, उससे कहीं अधिक दर्द स्त्री प्रसव के समय सहती है।
2. माँ बनने के बाद शरीर ढलने पर उसे पति और बच्चों से उपेक्षा भी झेलनी पड़ती है।
3. मानव जाति की निरंतरता बनाए रखने के लिए स्त्री जो संघर्ष करती है, उतना बड़ी-बड़ी डींगें हाँकने वाले सिपाही भी नहीं करते – इसलिए वह उनसे अधिक मज़बूत और बहादुर है।

कोई दो बिंदु – 2 अंक।

— समाप्त —

Questions restated from the CBSE Class XII Board Examination 2022 (set 2/1/1) for practice. Reading passages and map items are described, not reproduced.